ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-3* June- 2021
Anthology : The Research

कोरोना महामारी से शिक्षा क्षेत्र मे आने वाली चुनौतियाँ और उनके समाधान (डिजिटल शिक्षा के परिदृश्य में)

Challenges in Education Sector Due To Corona Pandemic and Their Solutions (In The Context of Digital Education)

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

सीता त्रिपाठी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
बी.एड. विभाग,
अकबरपुर महाविद्यालय,
अकबरपुर, कानपुर देहात,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कोरोना के इस दौर में शिक्षा को सुचारू रूप से संचालित रखना, आज सबसे बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है। वर्तमान समय की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजिटल शिक्षा एक मात्र विकल्प के रूप मे उभरकर सामने आयी है। जिसके माध्यम से बच्चो को घर मे सुरक्षित रहते हुए शिक्षा प्रदान की जा सकती है। हालांकि इसकी राह इतनी आसान भी नहीं है। डिजिटल शिक्षा के मार्ग में बहुत सी बाधाएँ एवं चुनौतियाँ है, जिनको दूर करके हम एक सम्भव प्रयास करते हुए सभी बच्चों को शिक्षा की कड़ी से जोड़ सकते है। जरूरत है तो एक ऐसे मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर, इन्टरनेट हब की, जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों, गरीब परिवारों के बच्चों तक ऑनलाइन क्लासेस की पहुँच सम्भव हो सके एवं सरकार द्वारा डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु बहुत से कार्यक्रम चलाये जा रहे, प्लेटफार्म, ई–कंटेन्ट निर्मित किये जाने के साथ उपलब्ध भी कराये जा रहे है। यह तभी सार्थक माने जाएगें जब प्रत्येक शिक्षक व विद्यार्थी तक इसकी पहुँच सम्भव की जाए।

Keeping education running smoothly in this era of Corona is the biggest challenging task today. Keeping in mind the needs of the present times, digital education has emerged as the only option. Through which children can be provided education while staying safe at home. However, its path is not that easy either. There are many obstacles and challenges in the path of digital education, by removing which we can make a possible effort and connect all the children with the link of education. If there is a need for such a strong infrastructure, internet hub, through which access to online classes can be made possible to the children of rural areas, poor families and many programs are being run by the government to promote digital education, platforms, e-content are also being made available. . It will be considered meaningful only when it is made possible to reach every teacher and student.

मुख्य शब्द : कोरोना, डिजिटल शिक्षा। CORONA, Digital Education.

प्रस्तावना

वर्तमान परिदृश्य में हमारे चारों ओर संकट की स्थिति ने अपने पैर फैलाये हुए है। जहाँ देश में कोरोना महामारी का रूप ले चुका है, वही देश के हालात बिगड़ते चले जा रहे है। लॉकडाउन के कारण देश बंद हो गया है जिसके चलते सारी शैक्षणिक गतिविधियाँ मानो रूक सी गई है। जिसे फिर से गतिमान बनाना हमारे लिए एक चुनौती है।

दुनिया के इतिहास में कोरोना महामारी के रूप में फैल रहे कोरोना पर गहरी चिन्ता जताते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 11 मार्च 2020 को इसे वैश्विक महामारी घोषित किया। जिसके चलते 22 मार्च से पूरे देश मे जनता कर्फ्यू जैसे हालात उत्पन्न हो गये। इसके उपरान्त लाकॅडाउन लगा, जिसके फलस्वरूप देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, औद्योगिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस भयावह स्थिति से लोगो के मानसिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस वायरस के चपेट मे भारत सहित दुनिया के लगभग सभी देश आ चुके है। जिससे शिक्षा व्यवस्था ठप हो गई। शिक्षा व्यवस्था को पुनः गतिमान बनाने के लिए इसमे आने वाली चनौतियों का सामना करना पडेगा।[1]

अध्ययन के उद्देश्य

1. कोरोना महामारी से शिक्षा क्षेत्र मे आने वाली चुनौतियाँ का अध्ययन करना।

2. कोरोना महामारी का समाधान डिजिटल शिक्षा के परिदृश्य में करना।

कोरोना महामारी का दुनिया पर प्रभाव

दुनिया इस महामारी से बुरी तरह प्रभावित हुई है। जिसने विश्व में जन–जीवन को अस्त–व्यस्त कर दिया है। कोरोना काल में हर राष्ट्र जान–माल की हानि से जूझ रहा है। जहाँ मार्च माह में भारत जैसे घनी आबादी वाले राष्ट्र में गिने–चुने कोरोना मरीज थे, वहीं जुलाई माह में आते–आते कोरोना संक्रमण के मामले में भारत विश्व में तीसरे स्थान पर आ गया है।

दुनिया के कई हिस्सों में सीमाएं बन्द है। बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहें हैं, जिससे उनकी पढ़ाई पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। लोगों को कम्पनियों से निकाला जा रहा है। उनकी नौकरियाँ छूट रही और उनके घर के हालात बिगड़ रहे हैं। लोगों की बड़ी संख्या शहरों से ग्रामीणों की ओर पलायन कर रही हैं। उनको खाने–पीने से लेकर यातायात तक की दिक्कतें उठानी पड़ी है।

हमारी शिक्षा पर कोरोना का प्रभाव

संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्कों) ने एक रिपोर्ट जारी की, जिसके अनुसार वैश्विक स्तर पर इस महामारी से दुनिया के 193 देशों के 157 करोंड़ विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित हुई है, जो कि विभिन्न स्तरों पर नामांकन करने वाले विद्यार्थियों का 91.3 प्रतिशत है। इटली में लगभग 1 करोड़ विद्यार्थी, ईरान में 1.86 करोड़ विद्यार्थी, फ्रांस में 1.54 करोड़ विद्यार्थी, चीन में 27.84 करोड़ विद्यार्थी कोरोना के कारण शिक्षण संस्थान बन्द होने से प्रभावित हुये है। भारत के सम्बन्ध में यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 32 करोड़ विद्यार्थी इससे प्रभावित हुये है। जिसमें 15.81 करोड़ लड़कियाँ और 16. 25 करोड़ लड़के शामिल है। शिक्षा पर इस बड़े असर की विवेचना करने पर अनेक प्रकार के बदलावों और इसके साथ ही आने वाली चुनौतियों का सामना लोगों को करना पड़ रहा है।[2]

कोरोना के कारण देश में लॉकडाउन जैसे नये नियम का सामना हर किसी को करना पड़ा। लॉकडाउन के कारण माता–पिता तनाव से विचलित हुये, जिसका सीधा कारण महामारी के चलते उनकी नौकरी का छूट जाना। इसी के साथ दूर–दराज क्षेत्रों में काम की नई माँगों को लेकर भी काफी परेशान हुए। जिसके चलते लोगो को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा, ऐसे में अभिभावकगण अपने बच्चों को पढ़ाने का वक्त ही नहीं निकाल पा रहे हैं। हम सभी इस बात से अनभिज्ञ नहीं है कि इन संकटों के कारण बच्चे कम्प्यूटर व इन्टरनेट की पहँच से दूर हो रहे है। जून 2020 में *बिल गेट्स* ने कहा लॉकडाउन बच्चों पर सबसे बुरा प्रभाव डाल रहा।

एड च्वाइस पब्लिक ओपिनियन ट्रेकर एण्ड मार्निंग कंसल्ट नामक एक संस्था 14 मई 2020 ने लॉकडाउन के कारण घरों में बन्द बच्चों पर एक सर्वे किया। इस सर्वे में 2201 ऐसे वयस्कों को शामिल किया जिनके बच्चे स्कूलों में पढ़ते है, जो लॉकडाउन में घरों में है। इस सर्वे में निष्कर्ष स्वरूप कहा गया, कि बच्चों के सीखने का कौशल घट रहा है।[3]

ई एल एजूकेशन के कार्यकारी निर्देशक 'स्कॉट हार्ल्ट' ने कहा, कि गर्मियों में होने वाली लम्बी छुट्टियों का दुष्प्रभाव बच्चों की सीखने के कौशल पर पड़ता है। ऐंसे में कोरोना वायरस के चलते स्कूल बन्दी का काफी असर बच्चों पर पड़ रहा है।

नार्थवेस्ट इवेल्यूएशन एसोसिएशन की नई रिपोर्ट के अनुसार लॉकडाउन के कारण बच्चों के सीखने के कौशल में 30 व गणित के कौशल में 50 फीसदी की कमी आ सकती है।

कोरोना के भयावह स्थिति के असर ने पूरे विश्व की शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। इस समय सबसे बड़ी चुनौती है कि बच्चों को घर पर रहते हुए डिजिटल माध्यमों, ऑनलाइन लर्निग, ई लर्निग, वेब बेस्ड लर्निग, वर्चुअल स्पेस लर्निग, रिमोट लर्निग आदि के जरिये गुणवत्तापूर्ण, सृजनात्मक कार्यो का समागम करते हुए कैसे शिक्षा दी जाये? जिससे उनका सर्वागीण विकास हो सके। इस समय डिजिटल माध्यम से शिक्षा उपलब्ध करने के मार्ग में भी बहुत सी चुनौतियाँ हमारे समक्ष है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

दुनिया के इतिहास की अब तक की सबसे घातक महामारियाँ जिन्होंने विश्व में उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, औद्योगिक व शैक्षिक क्षेत्र को प्रभावित किया

1. 1918 ई0 में फैले 'स्पेनिश फ्लू' को इतिहास की सबसे घातक महामारियों में शामिल किया जाता है। इससे 5–10 करोंड़ लोगो की मौत हुई जिससे जनजीवन की क्षति होने के साथ ही शिक्षा प्रभावित हुई।
2. द ब्लैक डेथ 14वीं सदी मे फैली यह महामारी यूरोप के 2 करोड़ लोगों के मौत का कारण बनी।
3. तीसरी प्लेग महामारी दुनिया के इतिहास मे 1855–1960 ई0 की पाँचवीं सबसे घातक बीमारी साबित हुई। जिसकी वजह से भी देश की स्थिति गम्भीर हो गई थी।

कहते है इतिहास अपने आपको दोहराता है फिर से एक बार महामारी का भयावह दौर चला है, जिससे जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। इससे उबरने में कई साल लग जाएगें। वही शिक्षा व्यवस्था को भी गतिमान होने में समय लगेगा।

कोरोना विश्व में फैले इस वायरस से अब तक ऐसा कोई नहीं होगा, जो अनभिज्ञ हो। सीओवीआईडी–19, कोरोना वायरस का नवीन प्रकार है। 31 दिसम्बर 2019 मे चीन के वुहान मे इसकी पहचान हुई थी। इसका आधिकारिक नाम कोरोना वायरस है।

कोरोना की चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास

शिक्षा व्यवस्था को फिर से सूचारू रूप से चलाने व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों को देने के लिये इस महामारी के चलते केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा मिलकर अथक प्रयास किये जा रहे हैं, ताकि बच्चों को घर पर सुरक्षित रहते हुए अच्छी से अच्छी शिक्षा सामाग्री उपलब्ध कराई जा सके।

1. *एम.एच.आर.डी. मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक'* ने कहा, ''पहली बार एम.एच.आर.डी.में ऑनलॉइन लर्निंग के लिए एक समर्पित विभाग बन रहे है। सरकार ई लर्निंग से भविष्य को मजबूत करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास कर रही है। इसे शिक्षकों व छात्रों के लिए अधिक से अधिक प्रभावशाली और रचनात्मक बनाया जा सके।''
2. *26 मार्च को सी.बी.एस.ई. की एक अधिसूचना* जारी की गई, जिसके माध्यम से स्कूलों में कहा गया, ''स्कूलों, शिक्षकों और अच्छी शिक्षा की कमी से जूझ रहे देश को इस अवसर का फायदा उठाना चाहिए और तत्काल भौतिक कक्षाओं से ऊपर उठकर डिजिटल कक्षाओं को बढ़ावा देना चाहिए।''
3. *केन्द्र सरकार,* छात्रों व शिक्षकों के लिए पहले से कई ऑनलाइन कोर्सेज के प्लेटफार्म उपलब्ध करा चुकी है, जो विभिन्न कोर्सो से सम्बन्धित है जिसपर विद्यार्थी अपने समयानुसार कही भी, कभी भी, शिक्षा ग्रहण कर सकता है जैसे–MOOC, SWAYAM, OER आदि इन पर ऑडियो–वीडियो दोनो प्रकार के E-Content और रिकार्डेड सामाग्री उपलब्ध है।

वित मंत्री निर्मला सीतारमण ने 18 मई 2020 को शिक्षा क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कई पहलुओं की घोषणा की। जिससे विद्यार्थियों को कोविड–19 महामारी से सुरक्षित रहते हुए घर पर ई–लर्निंग के माध्यम से शिक्षा ग्रहण हो सके, जो निम्नवत् है[4]–

1. *''एक राष्ट्र, एक डिजिटल प्लेटफार्म और एक कक्षा एक चैनल''* की घोषणा की जिससे विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सामाग्री व पूरे देश में समान रूप से शिक्षा को बढ़ावा मिल सके।
2. *'मनो दर्पण'* पहल की शुरूआत की। जिसके माध्यम से वैश्विक महामारी के इस दौर को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों, विद्यार्थियों व उनके परिवारों को मनोवैज्ञानिक व भावात्मक सहयोग प्रदान किया जा सके। इससे देश के सभी स्कूली बच्चे, शिक्षक व उनके अभिभावकगण लाभान्वित होगे।
3. सरकार ऑनलाइन शिक्षा नियामक ढॉचे को उदार बनाकार *उच्च शिक्षा में ई–लर्निंग* का विस्तार कर रही। जिसमें शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में ऑनलॉइन पाठ्यक्रम शुरू किये जायेंगें।
4. इसी के साथ सरकार ने एक नया 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढॉचा' तैयार करने का निर्णय लिया है जिससे सीखने पर ध्यान केन्द्रित करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुभवनात्मक और सहज सीखने की प्रक्रिया के साथ–साथ रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलेगा।

एम.एच.आर.डी. मंत्री' निशंक' की उपस्थिति में 9 जून 2020 को एन.सी.ई.आर.टी. और रोटरी इंडिया ने ई–शिक्षा को और ज्यादा रचनात्मक बनाने हेतु एन.सी.ई. आर.टी. के सभी टीवी चैनलों पर कक्षा 1–12 के लिए प्रसारित होने वाली ई–शिक्षण सामाग्री के लिए समझौता ज्ञापन पर डिजिटल हस्ताक्षर किये। जिसके माध्यम से बच्चों को एन.सी.ई.आर.टी द्वारा अनुमोदित सामाग्री ई–शिक्षा हिन्दी माध्यम में मिलेगी।[5]

1. उच्च शिक्षण संस्थानों में व्यावसायिक क्षमता और इनक्यूबेटेड स्टार्टअप से सम्बन्धित सूचनाओं को व्यवस्थित करने में सहायता हेतु *'युक्ति 20'* पहल की शुरूआत की। आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में यह बहुत बड़ा कदम है यह पोर्टल विद्यार्थियों, शिक्षकों व शोधकर्ताओं को अपनी प्रौद्योगिकियों, नवाचारों और उद्यमिता की संस्कृती को बढ़ावा देने में सहायता करेगी।
2. शिक्षकों और माता–पिता की मदत से घर पर शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने हेतु विद्यार्थियों को सार्थक ढंग से जोड़ने के लिये प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रों, अभिभावकों व शिक्षकों के लिए 2 जुलाई 2020 को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा हिन्दी व अंग्रेजी में विकसित *'वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेण्डर'* जारी किया गया है।
3. एम.एच.आर.डी. मंत्री ने 14 जुलाई 2020 को ऑनलाइन माध्यम से डिजिटल शिक्षा पर *'प्रज्ञाता'* दिशा–निर्देश जारी किया।[6]

कोविड–19 के कारण शिक्षा के क्षेत्र में आयी चुनौतियाँ:–

1. परम्परागत शिक्षण व्यवस्था से डिजिटल शिक्षण की व्यवस्था करना हमारे सामने एक समस्या है। जिसकी व्यवस्था करना नितांत आवश्यक है। अतः डिजिटल शिक्षा के लिए डिजिटल अधोसंरचना व सहायक सेवाएँ जैसे संस्थावार ***अधिगम प्रबन्ध प्रणाली*** और शिक्षकों हेतु ***आनलॉइन प्रशिक्षण कार्यक्रम*** आदि की व्यवस्था करना होगा।
2. ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के पास स्मार्टफोन, लेपटॉप आदि उपकरण की व्यवस्था नहीं है, जिससे ऐसे बच्चे डिजिटल शिक्षा से वंचित हो रहे।
3. वही बहुत से अभिभावक ऐसे हैं जिनके यहां दो या तीन बच्चे एक ही समय में ऑनलाइन कक्षा के लिए तैयारी कर रहे। ऐसे मे सभी बच्चों के लिए संसाधन उपलब्ध कराना अभिभावकों के लिए एक समस्या है।
4. इसके साथ–साथ भारत में विद्यार्थियों के लिए डिजिटल संसाधनों व उपकरणों की कमी के अलावा इंटरनेट असुविधा व इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स रिचार्ज कराने जैसी समस्याएँ भी है। इसी के साथ ई–लर्निंग संसाधन अंग्रेजी माध्यम में होने के कारण भाषा भी एक बडी रूकावट है।
5. ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षको को कई तकनीकी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है जिससे शिक्षण बाधित होता है। वही बच्चों को भी नेटवर्क सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
6. ऑनलाइन कक्षा में प्रायोगिक कार्यो को नही करा सकते है, क्योंकि प्रशिक्षक व विद्यार्थी के पास उचित संसाधनों की आपूर्ति होगी। जिससे वह स्वयं करके नहीं सीख पायेंगे।
7. सुभाष नगर एस.बी.वी. के शिक्षक संतराम का ऐसा मानना है कि ऑनलाइन कक्षाओं के लिए ग्रुप में जुड़े बच्चे उतनी दिलचस्पी नहीं दिखा रहे। उनके अनुसार

शिक्षकों की तरफ से ग्रुप पर लगातार पाठ्य सामग्री भेजी जाती है। पर लम्बे समय तक ग्रुप पर भेजे गये मैसजो को बच्चें देखते ही नहीं है। और अब स्थिति यह है कि विद्यार्थी ग्रुप छोड़ रहे है।

8. ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से लम्बी कक्षाओं से बच्चों का रूझान पढ़ाई से हट जाता है। इसके साथ ही कम्प्यूटर, टैबलेट तथा स्मार्ट फोन के सामने काफी समय तक रहने से उनकी नजर कमजोर, तनाव या अन्य शारीरिक समस्यायें आ सकती है।
9. यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार स्कूल में पढ़ने वाले 50 फीसदी बच्चों के पास कंप्यूटर नहीं है। लेकिन जिनके पास है उनके स्क्रीन टाइम में अनियमित रूप से बढ़ोतरी देखी गईं। 30 देशों में 60 फीसदी बच्चों को साइबर प्रताड़ना, गेमिंग डिसआर्डर, ऑनलाइन अश्लील व्यवहार, फर्जी खबरें व अन्य तरह की परेशानियाँ आ रही।[7]

डिजिटल शिक्षा के परिदृश्य समाधान

1. जिन क्षेत्रो में डिजिटल ससांधनो व उपकरणों की कमी है उनको सुविधा दी जाए। जिससे सभी बच्चे इसका लाभ ले सके।
2. ***नेशनल सैंपल सर्वे 2017–18 के आकड़ों*** के मुताबिक सिर्फ 42 फीसदी शहरी और 15 फीसदी ग्रामीण घरों में इन्टरनेट की सुविधा है। इसके लिए अच्छी उपलब्धता हेंतु केन्द्र व राज्य सरकार को व्यवस्था करनी चाहिए।[8]
3. वर्तमान मे इन्टरनेट व सूचना तकनीकी की पहुँच बेहद संकुचित है। अतः ऑनलाइन शिक्षण को सुगम बनाने हेतु अच्छी स्पीड वाली इन्टरनेट उपलब्ध कराने के लिए सरकार इन्टरनेट हब की व्यवस्था करें।
4. ई–लर्निंग संसाधन का निर्माण हिन्दी व अंग्रेजी दोनों माध्यम में उपलब्ध कराया जाए। जिससे सुदूर क्षेत्रों जहाँ ज्ञान का बहुत प्रसार नहीं हुआ है उन क्षेत्रो के बच्चे भी इसका लाभ उठा सके।
5. आने वाले शैक्षणिक वर्ष के लिए पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक घंटों मे कमी की जाए, जिससे ऑनलाइन कक्षा मे सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति दर्ज की जा सके। एम.एच.आर.डी. मिनिस्ट्री द्वारा गाइडलाइन जारी की गई, जिसके तहत प्री प्राइमरी के विद्यार्थी हेतु ऑनलाइन क्लासेज रोजाना 30 मिनट की होगी। व 1–8 तक की कक्षाएँ 30 से 45 मिनट के दो ऑनलाइन सेशन तथा 9–12 तक की ऑनलाइन क्लासेज 30 से 45 मिनट के चार ऑनलाइन सेशन हो सकेगें।
6. डिजिटल शिक्षा के दौरान शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चीजों पर भी ध्यान दिया जाए, साथ ही साइबर सुरक्षा को लेकर भी एहतियात बरतने पर बल दिया जाए।
7. ई–शिक्षा को रचनात्मक बनाया जाए ताकि विद्यार्थी सीखने पर ध्यान केन्द्रित कर सके और पूरी कक्षा का लाभ ले, न कि बीच मे कक्षा छोडें।
8. शिक्षकों और माता–पिता की मदद से घर पर शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने हेतु विद्यार्थियों को सार्थक ढंग से जोड़ने के लिये नये–नये कार्यक्रम चलाये जाए।

निष्कर्ष

महामारी के इस दौर में शिक्षा प्रक्रिया जारी रखने के लिए वर्तमान में डिजिटल शिक्षा ही एक मात्र विकल्प के रूप में उभर कर सामने आया है। यकीनन ऑनलाइन शिक्षण वास्तविक शिक्षण मंच का स्थान कभी नहीं ले सकता। क्योंकि अध्यापक और शिष्य के बीच मानवीय संवाद की सम्भावनाएँ इसमें सम्भव नहीं हैं। इसके बावजूद यह एक अच्छा विकल्प है, शिक्षा के प्रसार के लिए। कोविड–19 महामारी की वजह से जहॉ सभी स्कूल–कालेज बन्द चल रहे है, वही इससे देशभर में स्कूलों में नामांकित 240 मिलियन से अधिक बच्चे प्रभावित हो रहे है। शिक्षा पर महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए स्कूलों को न केवल अब पढ़ाने और सिखाने के तरीको को ही उलटफेर करने होगे बल्कि बच्चों को घर पर स्कूली शिक्षा और स्कूल में स्कूली शिक्षा के एक स्वस्थ मिश्रण के माध्यम से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की एक उपयुक्त विधि भी उपलब्ध करनी होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, जे.सी. एवं जायसवाल, विजय (2013); शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्धन, अग्रवाल पब्लिकेशन*
2. *मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 26 मार्च, 2020*
3. *हिन्दुस्तान कानपुर, 14 मई 2020, वर्ष–85, अंक–114, पेज–14*
4. *https://www.tv9hindi.com publish date-24 jun 2020*
5. *मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 9 जून 2020*
6. *हिन्दुस्तान कानपुर 10 जून 2020, वर्ष–85, अंक–138*
7. *मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 23 जून 2020*
8. *नव भारत टाइम्स, नई दिल्ली, 15 जुलाई 2020*